IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उरांव जनजाति की शिक्षा और आय के स्तर पर प्रवास के प्रभाव का एक प्रायोगिक (पायलट) अध्ययन– छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले के विशेष संदर्भ में ।

शोधार्थी– आभा कुजूर

अर्थशास्त्र विभाग

शासकीय, विश्वनाथ यादव तामस्कर, स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सारांश

यह प्रायोगिक अध्ययन भारत के छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में रहने वाली उरांव जनजाति की शैक्षिक स्थिति और आय के स्तर पर प्रवास के प्रभाव की जांच करता है। नमूना आकार में 150 व्यक्ति शामिल हैं, जो जिले के भीतर 3 विकासखंडों (पत्थलगांव, कंसाबेल और फरसाबहार) के 5–5 गांव को लिया गया है जो दस अलग–अलग गांवों जिसमे , विकास खंड पत्थलगांव से (लड़ेग,कछार, पाकरगांव, कडरो,किरकिरा), विकास खंड कंसाबेल से (कुसुमताल, केनाडांड, कोंरगा, खुटेरा,खुटीटोली) और विकास खंड फरसाबहार से (अंकीरा, अबीरा, कंदईबहार, केरसई, खरीबहार) गांव शामिल हैं । सामान्यतः लोग ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र की ओर प्रवास इस आशा से करते हैं ताकि उनके परिवार की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल सके, लोगों के बच्चों को अच्छी शिक्षा के अवसर के साथ–साथ रोजगार के अवसर की प्राप्ति होने के तदुपरांत उनकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन भी प्रवास के कारण देखने को मिलते हैं जो की ग्रामीण लोगों के जीवन निर्वाह के स्तर में वृद्धि लाता है, यह अध्ययन 150 ग्रामीण उरांव जनजाति के लोगों के प्रतिक्रियाओं पर आधारित है जो लोग मौसम या अवश्यकता के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र से शहर की ओर पलायन करते हैं, जिसमे देखने को मिलता है की जो लोग ग्रामीण इलाकों से काम रोजगार की संभावनाओं के कारण शहर पलायन करते हैं उनकी सामाजिक व आर्थिक स्थिति में सकरात्मक सुधार पाया गया है जो की अधिक मजदूरी दर व अन्य सुविधाओं की उप्लब्धता के कारण देखने को मिलता है । उरांव जनजाति काफी पिछड़ी जनजाति होने के कारन

अधिकतर लोग जीवन निर्वाह के लिए ही शहरों में पलायन करते हैं जागरूकता उन्ही लोगों में देखने को मिलती है जिनका शैक्षणिक स्तर कुछ हद तक ठीक है।

प्रस्तावना–

प्रवास की स्थिति , जो दुनिया भर के समाजों को आकार देने वाली गतिशीलता का एक अभिन्न अंग है, क्षेत्रों और समुदायों के शैक्षिक और आर्थिक परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह प्रायोगिक अध्ययन भारत के छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में बसे एक हाशिए पर पड़े स्वदेशी समुदाय, उरांव जनजाति की शैक्षिक स्थिति और आय के स्तर पर प्रवास के प्रभावों पर प्रकाश डालता है। ग्रामीण–से–शहरी प्रवास पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह शोध इस बात की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि शहरी अवसरों का आकर्षण इन आदिवासी परिवारों के सामाजिक–आर्थिक प्रक्षेपवक्र को कैसे प्रभावित करता है। प्रवास अक्सर एक उज्जवल भविष्य की आकांक्षा से प्रेरित होता है, जहां परिवार जीवन की बेहतर गुणवत्ता की उम्मीद करते हैं, शिक्षा और रोजगार परिवर्तन के लिए प्राथमिक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में पलायन एक प्रचलित घटना है, क्योंकि व्यक्ति बेहतर शैक्षिक सुविधाओं और रोजगार की संभावनाओं तक पहुंच चाहते हैं। इन समुदायों के आर्थिक और सामाजिक कल्याण पर प्रवास की परिवर्तनकारी क्षमता तब स्पष्ट होती है जब उनके बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनकी समग्र आर्थिक स्थिति में स्पष्ट सुधार होता है। उरांव जनजाति के भीतर, जो अपने सामाजिक–आर्थिक नुकसान की विशेषता है, प्रवास एक महत्वपूर्ण जीवन रेखा के रूप में उभरा है। जनजाति का एक बड़ा हिस्सा आजीविका के अवसरों की खोज में शहरी केंद्रों की ओर आकर्षित होता है। उच्च मजदूरी और बेहतर जीवन स्थितियों की अपेक्षा इस ग्रामीण–से–शहरी आंदोलन को प्रेरित करती है, जो जनजाति को सामाजिक–आर्थिक समृद्धि की एक झलक प्रदान करती है।

यह अध्ययन 150 ग्रामीण ओरांव जनजाति के व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित है, जो मौसम या आवश्यकता के कारण अपने ग्रामीण आवासों से शहरी सेटिंग्स में प्रवास करते हैं। शोध उन लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में ठोस परिवर्तनों को पहचानने का प्रयास करता है जो रोजगार की संभावनाओं और बेहतर आजीविका की तलाश में पलायन करते हैं। प्रवास, बढ़ी हुई मजदूरी दरों और बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता के बीच एक आशाजनक सहसंबंध का खुलासा करते हैं, जो अंततः ओराओं जनजाति के भीतर सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के सकारात्मक परिवर्तन में परिणत होता है, एक समुदाय जो लंबे समय से आर्थिक अभाव से जूझ रहा है। इसी पृष्ठभूमि में यह अध्ययन जशपुर जिले में ओरांव जनजाति के संदर्भ में प्रवास की जटिल गतिशीलता को स्पष्ट करता है, जो प्रवास, शिक्षा और आर्थिक उत्थान के बीच की सांठगांठ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि का योगदान देता है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन–

नागेंद्रैया, रवींद्र, कुमार, बी. (2019) ने अपने अध्धयन में बताया है की जैसे–जैसे लोग ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र की ओर प्रावसा करते हैं उसका लम्बे समय में प्रभाव गरीबी को खत्म करने पर पड़ता है जिससे उनके आय में बढ़ोत्तरी देखने को मिलती है और यही आय लोग बच्चों की शिक्षा पर करते हैं जिसका प्रभाव पुनः अच्छे रोजगार के अवसर प्रदान करने पर पड़ता है क्योंकि हमेशा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा रोजगार के अवसर प्रदान करती है। यह सभी प्रभाव दीर्घकाल में देखने को मिलते हैं।

कल्याणी, वर्तक. (2020) ने बताया कि वर्तमान आधुनिक युग में कैसे प्रवास शिक्षा को प्रभावित करता है जिससे पूरा ग्रामीण क्षेत्र प्रभावित होता है। प्रवास का संस्कृति को भले नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है परंतु शिक्षा पर हमेशा सकारात्मक प्रभाव डालता है और पाया गया है कि ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र में प्रवास के कारण एक समय अंतराल में पूरा गांव शिक्षित होता है क्योंकि शहर में लोग काम करके अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजना शुरू करते हैं या शहर में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलने वाले विद्यालय में प्रवेश दिलाते हैं।

पोलम, सैदुलु., के., अइलैया (2015) ने अपनी शोध में पाया कि जो ग्रामीण क्षेत्र में लोग गरीबी के कारण अपने बच्चों को स्कूल भेजने में असमर्थ होते हैं और अक्सर बच्चे पढ़ाई छोड़ देते हैं परंतु सुविधाओं की अधिकता और रोजगार के अवसर होने के कारण शहरों में प्रवास करने से शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और लोगों की आय बढ़ने से शिक्षा भी बढ़ती है।

पी., कविता., डॉ.ए., वल्लियमई (2020) ने अपने शोध पत्र में पाया है कि ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के काम अवसर होने के कारण लोग शहर में पलायन करते हैं जिन्हें अधिकतर औद्योगिक क्षेत्र, कारखाने तथा निर्माण क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं जो कि अधिक मजदूरी दर होने के कारण लोगों के सामाजिक–आर्थिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और निवेश बढ़ने से पलायन भी तेजी से बढ़ता है जोकि लोगों के आम जीवन में भी परिवर्तन लाता है।

जयमंगल, चंद्र., बलराम, पासवान (2020) ने रांची जिले में उरांव जनजाति के लोगों के अध्ययन में पाया की उरांव जनजाति के लोगों में लगभग 25 से 30 साल की उम्र के लोग ज्यादा पलायन करते हैं साथ ही 90ः लोगों ने इस बात पर स्वीकृति जताई है की प्रवास सामाजिक आर्थिक स्थिति पर सकारात्मक प्रभाव डालता है साथ ही महिलाओं ने यह भी स्पष्ट किया है कि उनके लिए शहरों में रोजगार के ज्यादा अवसर है।

सन्देश, वि.वि., मनो (2020) ने अपने शोध में बताया है कि प्रायः जनजाति लोग, गरीब अथवा मजदूर लोग ही ग्रामीण क्षेत्र से शहरों की ओर पलायन करते हैं जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्र में सुविधाओं का अभाव व रोजगार के कमअवसर पाया जाना होता है।

अध्ययन के उद्देश्य–

१) उरांव जनजाति के शिक्षा व आय पर प्रवास के प्रभाव का अध्ययन करना।

२) उरांव जनजाति की आय व शिक्षा व्यय का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं–

१) प्रवास और शिक्षा के बिच कोई सम्बन्ध नहीं है।

२) प्रवास और आय के बिच कोई सम्बन्ध नहीं है।

अनुसंधान कार्यविधि–

इस प्रयोगात्मक पायलट अध्ययन के लिए उरांव जनजाति के 150 व्यक्तियों का एक नमूना चयन किया जाएगा, विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करते हुए, जो जिले के अलग–अलग क्षेत्रों से लिए गाये हैं । आकड़ों का संकलन सीधे साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किया गया है जिसे एक संरचित प्रश्नावली का उपयोग करके किया गया है जिसमें जनसांख्यिक लक्षण, शिक्षा, व्यवसाय, आय, प्रवास इतिहास, और सामाजिक–आर्थिक स्थिति शामिल है। अनुसंधान के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, आंकड़ा विश्लेषण और वर्गीकृत आकड़ों के बीच संबंधों की जांच के लिए आदिकृत गणितीय उपकरणों का उपयोग किया गया है । आंकड़ा विश्लेषण में प्रवास, शिक्षा और आय में परिवर्तन के बीच के संबंध की जांच करने के लिए काई–स्क्वेयर परीक्षण और प्रतीपगमन का प्रयोग किया गया है।

सीमाएं–

छत्तीसगढ़ के जशपुर में ओरांव जनजाति की शिक्षा और आय के स्तर पर प्रवास के प्रभाव पर इस प्रायोगिक अध्ययन की उल्लेखनीय सीमाएँ हैं। 10 गाँवों से 150 के नमूने का आकार सामान्यीकरण को सीमित कर सकता है, और क्षेत्रीय विशिष्टता अन्य आदिवासी समुदायों के लिए प्रयोज्यता को प्रतिबंधित करती है। अस्थायी बाधाएं और एक विशिष्ट जिले पर ध्यान केंद्रित करना दीर्घकालिक रुझानों या व्यापक क्षेत्रीय भिन्नताओं को नहीं पकड़ सकता है। जनजाति के भीतर सांस्कृतिक विविधता, डेटा संग्रह की चुनौतियां और संभावित बाहरी प्रभाव अतिरिक्त सीमाएं हैं। अध्ययन के सांख्यिकीय तरीकों में बाधाएं हैं, और इसकी क्रॉस–सेक्शनल डिजाइन कार्य–कारण स्थापित करने में बाधा डालती है। निजता और सहमति से संबंधित नैतिक विचार महत्वपूर्ण हैं। इन सीमाओं के बावजूद, प्रायोगिक अध्ययन एक प्रारंभिक समझ प्रदान करता है, जो भविष्य, अधिक व्यापक अनुसंधान के लिए एक नींव के रूप में कार्य करता है।

परिकल्पना परिक्षण–

प्रथम परिकल्पना परीक्षण

शून्य परिकल्पना– प्रवास और शिक्षा के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना– प्रवास और शिक्षा के बीच सम्बन्ध है।

तालिका क्रमांक–01

Crosstab				
Count				
		Education		Total
		No Effect	Yes There is effect	
Migration	No Migration	20	0	20
	Yes Migrated	20	110	130
Total		40	110	150

क्रॉसस्टाब्यूलेशन तालिका किसी प्रभाव की उपस्थिति या अनुपस्थिति के संबंध में प्रवास की स्थिति और शिक्षा के बीच संबंधों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। विशेष रूप से, जिन सभी व्यक्तियों ने प्रवास नहीं किया, उनके पास (कोई प्रभाव नहीं) शिक्षा है, जो इस उपसमूह में एक स्पष्ट पैटर्न का सुझाव देती है। दूसरी ओर, प्रवास करने वालों के बीच, एक अधिक सूक्ष्म वितरण उभरता है। एक महत्वपूर्ण अनुपात, 110 व्यक्ति, (हाँ वहाँ प्रभाव है) शिक्षा प्रदर्शित करते हैं। यह खोज प्रवास और प्रभाव की धारणा के बीच एक संभावित संबंध का तात्पर्य है, जो सामाजिक गतिशीलता की जांच करते समय दोनों चरों पर विचार करने के महत्व पर जोर देती है। 150 व्यक्तियों की कुल गिनती नमूने के एक व्यापक अवलोकन को दर्शाती है, जिससे इस बात की सूक्ष्म समझ मिलती है कि प्रवास की स्थिति और शिक्षा श्रेणियां कैसे एक–दूसरे को काटती हैं। कार्य–कारण या विशिष्ट प्रवृत्तियों के बारे में अधिक निश्चित निष्कर्ष निकालने के लिए आगे के सांख्यिकीय विश्लेषण या प्रासंगिक जानकारी आवश्यक हो सकती है, लेकिन यह क्रॉसस्टाब्यूलेशन प्रवास, शिक्षा और कथित प्रभावों के बीच संबंधों के एक मूलभूत अन्वेषण के रूप में कार्य करता है।

तालिका क्रमांक– 02

Chi-Square Tests			
	Value	df	Asymptotic Significance (2-sided)
Pearson Chi-Square	63.462[a]	1	.000
Continuity Correction[b]	59.208	1	.000
Likelihood Ratio	62.351	1	.000
Fisher's Exact Test			
Linear-by-Linear Association	63.038	1	.000
N of Valid Cases	150		
a. 0 cells (0.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 5.33.			
b. Computed only for a 2x2 table			

इस परिकल्पना के परिक्षण में काई स्कवायर का मूल्य 63.462 है जिसकी पी वैल्यू 0. 000 है जो की 0.05 से काम है अतः यह शुन्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है अतः यह साबित होता है की प्रवास का शिक्षा पर सीधा व सकारात्मक प्रभाव है।

द्वितीय परिकल्पना परीक्षण

शून्य परिकल्पना– प्रवास और आय के बीच कोई सम्बन्ध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना– प्रवास और आय के बीच सम्बन्ध है।

तालिका क्रमांक–03

Crosstab				
Count				
		Income Effect		
		No Effect	Yes there is effect	Total
Migration	No Migration	20	0	20
	Yes Migrated	20	110	130
Total		40	110	150

प्रस्तुत क्रॉसस्टाब्यूलेशन तालिका प्रवास की स्थिति, आय प्रभावशीलता और प्रभाव की घटना के बीच संबंध पर प्रकाश डालती है। विशेष रूप से, (नो माइग्रेशन) श्रेणी के भीतर, सभी 20 व्यक्ति आय पर (नो इफेक्ट) की रिपोर्ट करते हैं, जो इस उपसमूह में एक सुसंगत प्रवृत्ति का सुझाव देता है। इसके विपरीत, प्रवास करने वालों (हाँ प्रवासित) के बीच एक अधिक जटिल पैटर्न सामने आता है। जबकि 20 व्यक्ति अभी भी आय पर ष्कोई प्रभाव नहींष की रिपोर्ट करते हैं, 110 व्यक्तियों का एक बड़ा हिस्सा इंगित करता है कि एक प्रभाव है। यह विसंगति इस संभावना पर संकेत देती है कि प्रवास को आय प्रभावशीलता की अलग–अलग धारणाओं से जोड़ा जा सकता है। 150 व्यक्तियों का व्यापक कुल, प्रवास, आय

प्रभावशीलता और प्रभावों की उपस्थिति या अनुपस्थिति के बीच परस्पर क्रिया का एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करते हुए, नमूने की संपूर्णता को समाहित करता है। जबकि यह क्रॉसस्टाब्यूलेशन इन संबंधों को समझने के लिए आधार तैयार करता है, डेटासेट के भीतर कार्य–कारण या विशिष्ट रुझानों की अधिक सूक्ष्म व्याख्या के लिए आगे के विश्लेषण और प्रासंगिक जानकारी आवश्यक हो सकती है।

तालिका क्रमांक–04

Chi-Square Tests			
	Value	df	Asymptotic Significance (2-sided)
Pearson Chi-Square	63.462[a]	1	.000
Continuity Correction[b]	59.208	1	.000
Likelihood Ratio	62.351	1	.000
Fisher's Exact Test			
Linear-by-Linear Association	63.038	1	.000
N of Valid Cases	150		
a. 0 cells (0.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 5.33.			
b. Computed only for a 2x2 table			

इस परिकल्पना के परिक्षण में काई स्कवायर का मूल्य 63.462 है जिसकी पी वैल्यू 0. 000 है जो की 0.05 से काम है अतः यह शुन्य परिकल्पना निरस्त की जाती है और वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है अतः यह साबित होता है की प्रवास का आय पर सीधा व सकारात्मक प्रभाव है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

तालिका क्रमांक– 05

Model Summary				
Model	R	R Square	Adjusted R Square	Std. Error of the Estimate
1	.680[a]	.462	.458	1125.47862
a. Predictors: (Constant), Income				

(शैक्षणिक व्यय) में भिन्नताओं की व्याख्या करने के लिए भविष्यवक्ता चर के रूप में (आय) को शामिल करने वाला प्रतिगमन मॉडल, व्याख्यात्मक शक्ति का एक मध्यम स्तर प्रदान करता है, जैसा कि. 462 के आर–वर्ग मूल्य से प्रमाणित होता है। इससे पता चलता है कि शैक्षिक व्यय में लगभग 46.2ः भिन्नता को आय के स्तर में भिन्नता के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। समायोजित आर–वर्ग, मॉडल में भविष्यवक्ताओं की संख्या के लिए लेखांकन,. 458 है, जिसका अर्थ है कि मॉडल आय भविष्यवक्ता के समावेश द्वारा शुरू की गई जटिलता के लिए पर्याप्त रूप से समायोजित करता है।

1125.47862 पर मापा गया अनुमान की मानक त्रुटि, उस सटीकता का संकेत देती है जिसके साथ मॉडल शैक्षिक व्यय की भविष्यवाणी करता है।

तालिका क्रमांक–06

Coefficients[a]

Model		Unstandardized Coefficients		Standardized Coefficients	t	Sig.
		B	Std. Error	Beta		
1	(Constant)	-1915.278	504.943		-3.793	.000
	Income	.428	.038	.680	11.276	.000

a. Dependent Variable: EducationExp

गुणांक तालिका प्रतिगमन मॉडल की व्याख्या करने के लिए मूल्यवान जानकारी प्रदान करती है, जहां (आय) भविष्यवक्ता चर है और (शिक्षा व्यय) आश्रित चर है। इंटरसेप्ट शब्द (स्थिर)–1915.278 है, जो दर्शाता है कि जब आय शून्य है, तो अनुमानित शैक्षिक व्यय–1915.278 इकाइयाँ हैं। हालांकि, अध्ययन के संदर्भ में अवरोधन की व्याख्या को सावधानीपूर्वक देखा जाना चाहिए। (आय) के लिए गुणांक 0.428 है, और इसके संबंधित मानकीकृत गुणांक (बीटा) 0.680 है। इससे पता चलता है कि आय में प्रत्येक इकाई वृद्धि के लिए, अनुमानित शैक्षिक व्यय में 0.428 इकाइयों की वृद्धि होती है। 0.680 का मानकीकृत गुणांक (बीटा) इंगित करता है कि आय का शैक्षिक व्यय पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है, और यह प्रभाव सकारात्मक दिशा में है। 11.276 का टी–सांख्यिकीय 0.000 के पी–मान से जुड़ा हुआ है, जो दर्शाता है कि (आय) के लिए गुणांक सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण है। यह इस बात के प्रमाण को मजबूत करता है कि मॉडल में आय शैक्षिक व्यय को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। 0.462 के समग्र मॉडल के आर–वर्ग मूल्य से पता चलता है कि शैक्षिक व्यय में लगभग 46.2: भिन्नता को आय में भिन्नता से समझाया जा सकता है। प्रतीपगमन विश्लेषण आय और शैक्षिक व्यय के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध को इंगित करता है। जैसे–जैसे आय बढ़ती है, वैसे–वैसे अनुमानित शैक्षिक व्यय में वृद्धि होती है, जो अध्ययन के संदर्भ में शैक्षिक निवेश की वित्तीय गतिशीलता को समझने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

रेखाचित्र– 01

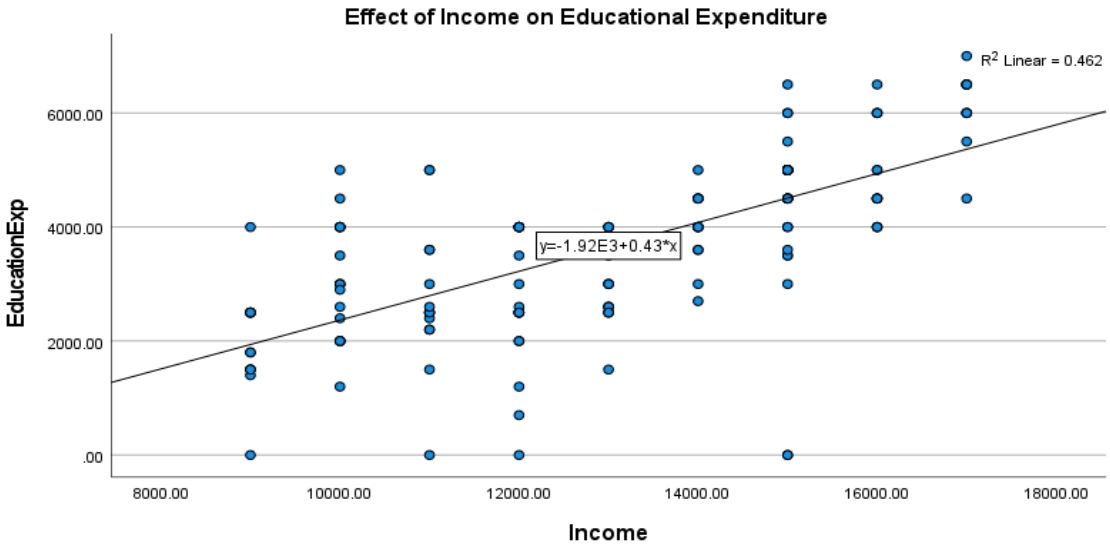

दिए गए रेखाचित्र में प्रतिगमन समीकरण, शिक्षा व्यय =−1915.278 (0.428 × आय) आय और अनुमानित शैक्षिक व्यय के बीच गणितीय संबंध को समाहित करता है। इंटरसेप्ट शब्द,−1915.278, अनुमानित शैक्षिक व्यय को दर्शाता है जब आय शून्य है, लेकिन इसका व्यावहारिक महत्व सीमित हो सकता है क्योंकि डेटा के संदर्भ में आय वास्तविक रूप से शून्य होने की संभावना नहीं है। ढलान, 0.428, आय में प्रत्येक एक−इकाई वृद्धि के लिए शैक्षिक व्यय में परिवर्तन की दर को दर्शाता है। एक सकारात्मक ढलान एक सकारात्मक सहसंबंध को इंगित करता है, यह सुझाव देते हुए कि जैसे−जैसे आय बढ़ती है, मॉडल शैक्षिक व्यय में 0.428 इकाइयों की इसी वृद्धि की भविष्यवाणी करता है। जब एक स्कैटरप्लॉट पर देखा जाता है, तो प्रतिगमन रेखा बाएं से दाएं की ओर ऊपर की ओर ढलती है, जो डेटा में सामान्य प्रवृत्ति को चित्रित करने के लिए एक भविष्यसूचक उपकरण के रूप में कार्य करती है। स्कैटरप्लॉट बिंदु रेखा के चारों ओर बिखरे हुए होंगे, जो वास्तविक डेटा बिंदुओं में परिवर्तनशीलता को दर्शाते हैं। इसलिए, यह प्रतिगमन रेखा आय स्तरों के आधार पर शैक्षिक व्यय का अनुमान लगाने के लिए एक गणितीय ढांचा प्रदान करती है, जो दिए गए मॉडल के भीतर इन दो चरों के बीच संबंधों में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

निष्कर्ष−

आंकड़ों के व्यापक विश्लेषण से शैक्षणिक व्यय और आय दोनों पर प्रवास के प्रभावों में बहुआयामी अंतर्दृष्टि का पता चलता है। सबसे पहले, क्रॉसस्टाब्यूलेशन ने विशिष्ट पैटर्न का प्रदर्शन किया, जिससे पता चलता है कि जो व्यक्ति प्रवास नहीं करते थे, उनमें आय पर (कोई प्रभाव नहीं) की सर्वसम्मत धारणा थी। इसके विपरीत, प्रवासियों के बीच, एक महत्वपूर्ण हिस्से ने शैक्षिक व्यय पर (प्रभाव) की सूचना दी। यह प्रारंभिक अवलोकन प्रवास और आय और शैक्षिक व्यय दोनों की परिवर्तित धारणाओं के बीच एक संभावित संबंध का सुझाव देता है। प्रतिगमन विश्लेषण, जिसमें एक भविष्यवक्ता के रूप में आय शामिल थी, ने सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध का संकेत दिया। प्रतिगमन समीकरण में आय के लिए सकारात्मक गुणांक का तात्पर्य है कि जैसे−जैसे आय बढ़ती है, मॉडल शैक्षिक व्यय में इसी तरह की वृद्धि की भविष्यवाणी करता है। इस खोज से पता चलता है कि आय प्रवास और शैक्षिक व्यय के बीच संबंधों को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है।

व्यापक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट है कि प्रवास आय और व्यक्तियों के बाद के शैक्षिक व्यय पैटर्न दोनों पर दोहरा प्रभाव डाल सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवास आय के स्तर में परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है, और ये परिवर्तन, बदले में, शैक्षिक व्यय के संबंध में निर्णयों को प्रभावित करते हैं। हालांकि, इस विश्लेषण से कार्य−कारण को निश्चित रूप से स्थापित नहीं किया जा सकता है, और अध्ययन के दायरे से परे अतिरिक्त कारक देखे गए संबंधों में योगदान कर सकते हैं। आकड़ा प्रवास के प्रभावों की एक सूक्ष्म तस्वीर पेश करता है, जो आय और शैक्षिक व्यय की परिवर्तित धारणाओं के साथ इसके जुड़ाव को उजागर करता है। आय और शैक्षिक व्यय के बीच सकारात्मक संबंध प्रवास, आय परिवर्तन और शैक्षिक निवेश निर्णयों के बीच एक गतिशील परस्पर क्रिया का सुझाव देते हैं। यह अध्ययन व्यक्तियों की वित्तीय गतिशीलता और शैक्षिक विकल्पों पर प्रवास के प्रभाव की जटिलताओं की गहरी जांच के लिए एक आधार के रूप में कार्य करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

नागेंद्रैया, रवींद्र, कुमार, बी. (2019) शैक्षिक प्राप्ति और मानव पूंजी पर ग्रामीण प्रवास का प्रभाव। उभरती प्रौद्योगिकियों और नवीन अनुसंधान का जर्नल।

कल्याणी, वर्तक. (2020) प्रवासन की संस्कृति वाले क्षेत्रों में प्रवासन और शिक्षारू कुंकेरी गांव, कोंकण, महाराष्ट्र से अवलोकन।

पोलम, सैदुलु., के., अइलैया (2015) बच्चों की शिक्षा पर ग्रामीण–शहरी श्रम प्रवास का प्रभाव–तेलंगाना राज्य के महबूबनगर जिले में एक अध्ययन। प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान में अंतर्राष्ट्रीय जर्नल।

पी., कविता., डॉ.ए., वल्लियमई (2020) भारत में श्रमिक प्रवासन के कारण और प्रभाव। 40(60)–162–170.

जयमंगल, चंद्र., बलराम, पासवान (2020) भारत में उराँव जनजातियों के बीच प्रवासन के बारे में धारणा। क्लिनिकल महामारी विज्ञान और वैश्विक स्वास्थ्य, 8(2)–616–622।

फराई, न्यिका., डेबरा, शेफर्ड (2023) दक्षिण अफ्रीका में गैर–प्रवासी स्कूल समापन दर और नामांकन पर प्रवासन का प्रभाव। अफ्रीकी मानव गतिशीलता समीक्षा।

सन्देश, वि.वि., मनो (2020) मानव पूंजी पर प्रवासन का प्रभाव और जनजाति लोगों का व्यसनी व्यवहार।